IJAER/ November-December 2023/Volume-12/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया तथा संप्रत्ययीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन

रीना मौर्या
शोधार्थी, ग्लोकल स्कूल कला व समाजिक विज्ञान
द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर(उत्तर प्रदेश)

डॉ. चंद्रकांत चावला
शोध निर्देशक , ग्लोकल स्कूल कला व समाजिक विज्ञान
द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

सारांश

वर्तमान में जहाँ एक ओर भारत के अनेक युवा, जीवन के विभिन्न क्षेत्र; यथा विज्ञान, तकनीकि, प्रौद्योगिकी, संचार, प्रबन्ध, खेल तथा चिकित्सा इत्यादि में न केवल राष्ट्र वरन् विश्व कीर्तिमान स्थापित कर रहें हैं, वहीं दूसरी ओर भारत के अधिकांश युवा आज भी बेरोजगारी, निर्धनता निरक्षरता आदि गम्भीर समस्याओं से ग्रस्त हैं। वर्तमान समय मे भारत का युवा वर्ग जिसमें मुख्यतः 'छात्र वर्ग' सम्मिलित है, जिस प्रकार से अपने प्रमुख लक्ष्य–विद्याअर्जन से भटक कर राजनीति में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है, वह एक चिन्तनीय विषय बनता जा रहा है। समकालीन राजनीति स्थानीय, क्षेत्रीय, प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर इतनी अधिक दूषित, अनैतिक एवं भ्रष्ठ हो चुकी है कि हमारा सभ्य समाज कई बार राजनीति की चर्चा तक नहीं करना चाहता है। वर्तमान में नैतिक उत्तरदायित्व एवं जनता की सेवा का साधन नहीं वरन् धन व शक्ति अर्जित करने का माध्यम बन गई है।

भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से अनेक घटकों में वृद्धि हुई है। जैसे–विज्ञान तथा तकनीक का विकास, प्रौद्योगिकी में परिवर्तन, शिक्षा तथा चिकित्सा मे क्रान्ति, सामाजिक एवं आर्थिक विकास तथा शैलीमें परिवर्तन इत्यादि। इसके अलावा युवाओं की जीवन–शैली में आधारभूत परिवर्तन हुए है। अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि आधुनिकीकरण भारत वर्ष में एक वरदान सिद्ध हुआ हैं। अध्ययन के आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि भारत में आधुनिकीकरण के अनेक दुष्परिणाम हुए है। जैसे सम्यता तथा संस्कृति का अंत, मानसिकता तथा नैतिकता मे नकारात्मक परिवर्तन, शिक्षा में विकास, पारिवारिक तथा सामाजिक मूल्यों का ह्रास, प्रेमतथा भाईचारे का अन्त तथा युवावर्ग की जीवन शैलीमें नकारत्मक परिवर्तन इत्यादि है।

प्रस्तावना

आधुनिकीकरण मुख्य रूप से चार क्षेत्रों में घटित होता है–आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक व्यवस्था। आर्थिक आधुनिकीकरण से तात्पर्य लाभार्जन, बुद्धिसंगत आर्थिक गतिविधि, परिष्कृत तकनीक के बेहिचक प्रयोग, उत्पादन व्यवस्था में अभिनव परिवर्तन लाने हेतु सतत प्रयत्नों के सम्बन्ध में दृष्टिकोण परिवर्तन से है। कृषक अर्थव्यवस्था जो मात्र उपभोग केन्द्रित थी, आज औद्योगिक स्वरूप ले रही है। औद्योगिक अर्थव्यवस्था में ऐसे व्यक्ति होते हैं, जिनका स्वभाव उद्यमिक तथा उपलब्धि आकांक्षा लाभ प्रेरित होती है। ये लोग आर्थिक इकाइयों के प्रति तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखते हैं तथा परिष्कृत आधुनिक प्रौद्येगिकी का अत्यधिक प्रयोग करते हैं। यहाँ तक कि आधुनिक समाज में कृषि ने भी औद्योगिक विशेषताएं अपना ली हैं। इसके अन्तर्गत किसान पर्याप्त बुद्धिसंगत ढंग से खेती कर रहे हैं। वे कृषि प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करते हैं तथा बाजार की माँग के अनुसार उत्पादन का प्रयास करते हैं। किसान द्वारा की जा रही खेती काफी कुछ वैज्ञानिक ढंग से की जा रही है। पूर्व–आधुनिक अर्थव्यवस्था में कृषि उपभोग केन्द्रित थी तथा खेती करने में परम्परागत तरीकों का प्रयोग होता था।

आर्थिक आधुनिकीकरण से तात्पर्य लोगों का लाभप्रद आर्थिक क्रियाओं में लाभकी प्रेरणा से बुद्धिसंगत ढंग से लगे होना है। उद्यमीय वातावरण के विकास, व्यावसायिक गतिशीलता में वृद्धि, प्रौद्योगिकी विकास तथा लोगों में उसे अपनाने की तत्परता के साथ ही आर्थिक आधुनिकीकरण का विकास होता है। अतीत की जीवन निर्वाह स्तर की कृषि अर्थव्यवस्था, आज औद्योगिक बाजार अर्थव्यवस्था में बदल चुकी है। आधुनिकीकरण के प्रभाव में कृषि ने भी उद्योग की प्रकृति अपना ली है। अपनी खेती से जुड़ी गतिविधियों में किसचान भी पूरी तरह से वैज्ञानिक और उद्यमिक हो गया है। आधुनिक अर्थव्यवस्था में आर्थिक सम्बन्ध वैधानिक–संविदात्मक प्रकार के होते हैं,जबकि परम्परागत अर्थव्यवस्था में सम्बन्ध प्रथागत होते है। भूस्वामी का काश्तकारों तथा कृषि श्रमिकों पर प्रथागत अधिकार होता था। भूस्वामी द्वारा श्रमिकों को दी जाने वाली मजदूरी केवल प्रथा द्वारा ही निश्चित होती थी।

नगरीकरण तथा आर्थिक आधुनिकीकरण साथ–साथ चलते हैं तथा एक दूसरे कोबढ़ावा देते हैं। नगरीकरण, उद्यमीय और औद्योगिक संस्कृति का प्रसार करता है। नगरीय संस्कृति से प्रभावित लोगों का झुकाव तार्किक–आर्थिक क्रियाओं की तरफ होता है। उनमें उच्च स्तर का उपलब्धि अभिप्रेरण होता है तथा वे लाभ देने वाले उद्यमों का अनुसरण करने को प्रेरित होते हैं। नगरीय संस्कृति उद्यमीय व्यक्तित्व को प्रोत्साहित

करती है। नगरीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें श्रमशक्ति कृषि क्षेत्र से, निर्माण एवं अन्य गैर–कृषि क्षेत्रों की ओर स्थानान्तरित हो जाती है। औद्योगिक और गैर–औद्योगिक क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी का अत्यधिक प्रयोग होता है।

आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था, यूरोपीय पुनर्जागरण के बाद का एक बड़ा राजनीतिक परिवर्तन था। पुनर्जागरण के कारण राज्य और चर्च एक–दूसरे से पृथक हुए। पूर्व–पुनर्जागरण काल में ये दोनों संयुक्त थे। इस क्रान्तिकारी परिवर्तन ने समानता, स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र के सिद्धान्तों पर आधारित राजनीतिक व्यवस्था की नींव डाली। राज्य को धर्मनिरपेक्ष तथा चर्च के नियन्त्रण से पूरी तरह स्वतन्त्र घोषित किया गया। धर्मनिरपेक्ष राज्य का अर्थ है कि राज्य का अपना कोई धर्म नहीं होगा तथा यह नागरिकों द्वारा किसी धर्म के षांतिपूर्ण पालन में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा। एक धर्मनिरपेक्ष राज्य किसी नागरिक को राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए धर्म के दुरूपयोग की अनुमति नहीं देगा।लोकतंत्र, शासन का सर्वाधिक स्वीकार्य और आधुनिक स्वरूप है। दुनिया केलगभग सभी राज्य पूर्ण या आंशिक रूप से लोकतांत्रिक हैं। यह सबसे अधिक मानवतावादी राजनीतिक व्यवस्था है। लोकतन्त्र की मूल प्रस्तावना में समानता, स्वतन्त्रता और भ्रातृत्व समाहित है। लोग एक नागरिक के रूप में अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति राजनीतिक रूप से चेतन और जागरूक हैं। राजनीतिक रूप से आधुनिक व्यक्तिदेश की राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेता है। इसके लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं कि देश में मुक्त और साफ–सुथरे चुनाव सम्भव हो सकें तथा सभी नागरिकों कोराजनीतिक प्रक्रिया में सहभागिता के समान अवसर और अधिकार उपलब्ध हो सकें। एक स्वस्थ और सर्वाधिक सफल राजनीतिक आधुनिकीकरण वह है, जिसमें जनता संतुष्टहो।आधुनिकीकरण मुख्य रूप से संस्कृति से जुड़ी प्रक्रिया है, जो तार्किक और वैज्ञानिक विश्व दृष्टि तथा नए सामाजिक मूल्य उत्पन्न करती है। इसके कारण समाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन होता हैं। आधुनिकीकरण केप्रभाव से परम्परागत भारतीय सामाजिक संरचना तथा दुनिया के ज्यादातर परम्परागत समाजों में विशिष्ट परिवर्तन होते हैं। ये परिवर्तन सत्तावाद से व्यष्टिवाद की ओर,नृजातीय से मानवतावाद की ओर, मतान्धता और भावुकता से तार्किकता की ओर, संयुक्त एवं बड़े परिवार से नाभिकीय एवं छोटे परिवार की ओर, प्रदत्त प्रस्थिति से अर्जित प्रस्थिति की ओर, असमानता से समानता की ओर, पुरुषों सत्तावाद से महिला सशक्तिकरण की ओर हुआ है।

अवधारणात्मक स्पष्टीकरण

प्रस्तावित अध्ययन में निम्नांकित अवधारणाएँ प्रयोग की गई हैं जिन्हें अनुभाविक परिस्थिति में निम्न प्रकार से परिभाषित किया जाएगा–

1. **युवा**–प्रस्तावित अध्ययन में युवा से अभिप्राय कॉलेजों/विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं से है।

2. **आधुनिकीकरण**–युवाओं में अपनी परम्परागत धारणाओं के स्थान पर आधुनिक एवं नवीन ज्ञान, विश्वास, मूल्य, नवीनता, यथार्थता एवं बौद्धिकता को महत्व देना ही आधुनिकीकरण माना जाएगा।

3. **सहायक कारक**–उच्च शिक्षा के अतिरिक्त आधुनिकीकरण के सन्दर्भ में उभरती हुई जीवन–शैली को प्रोत्साहन देने वाले जिन कारकों पर ध्यान दिया जाएगा,उनमें आयु, वैवाहिक स्थिति, पारिवारिक पृष्ठभूमि (माता–पिता की शिक्षा, व्यवसाय, परिवार का स्वरूप व आकार, परिवार की आय), जनसंचार के माध्यमों के प्रति प्रकाशकरण की मात्रा आदि प्रमुख होंगे।

4. **परिणाम**–इससे अभिप्राय युवाओं पर आधुनिकीकरण के उन प्रभावों से है जिनसे उनके परम्परागत जीवन एवं आचरण में परिवर्तन हो रहा है।

भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया एवं संप्रत्ययीकरण

भारत में आधुनिकीकरण सर्वव्यापी नहीं रहा है और न ही इस प्रक्रिया ने भारतीय समाज में कोई गम्भीर संकट ही उत्पन्न किया है। इसका कारण है कि इस समाज की अपनी विशिष्ट संरचनात्मक परिस्थिति है और वह यह कि सांस्कृतिक व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था से स्वतन्त्र है। ऐसा आइजेन्स्टेड का कहना है। यह जाति स्तरीकरण की व्यवस्था तथा राजनीतिक व्यवस्था एक दूसरे से स्वतन्त्र रही है। आधुनिकीकरण मुख्य रूप से एक उप–संरचना और उप–संस्कृति के रूप में विकसित हुआ। जीवन के सभी क्षेत्रों में इसका व्यापक विस्तार नहीं था। योगेन्द्र सिंह का विचार है कि भारतीय समाज में आधुनिकीकरण के द्वितीय चरण के दौरान भी किसी बड़े संरचनात्मक संकट की सम्भावना नहीं है। अधिनियम तथा नगरीकरण, औद्योगीकरण, शिक्षा के विस्तार और राजनीतिकरण की प्रक्रियाओं ने बहुत से परिवर्तन किए हैं। इनके द्वारा सामाजिक असमानता और अस्पृश्यता को दूर करने का प्रयत्न किया गया है। भारत में आधुनिकीकरण ने परम्परा को प्रतिस्थापित नहीं किया है, इसके स्थान पर, परम्परागत संरचनाओं और निष्ठाओं को ऐसे उद्देश्यों के लिए

लामबन्द किया जा रहा है, जो मूलतः आधुनिक हैं। देश की लोकतान्त्रिक राजनीतिक प्रक्रियाओं में जातिगत और धार्मिक निष्ठाओं तथा लोक गीतों और नृत्यों का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है। कुछ परम्पराएं मजबूत हुई। धार्मिक आचरणों तथा कर्मकाण्डों को आधुनिक प्रौद्योगिकी और जन संचार माध्यमों के प्रयोग से आधुनिक बनाया जा रहा है। फिर भी भारत में आधुनिकीकरण सुसंगत नहीं रहा हैं। लघु संरचनाओं के कुन्द पक्षों जैसे जाति और परिवार में तो आधुनिकीकरण हुआ है लेकिन कुछ अन्य पक्ष आधुनिक मूल्यों के प्रभाव से अछूते रहे हैं।

सुस्पष्टसस्तरण आरै पृथक्कारी मानदण्डों वाली पुरानी कठोर जाति संरचना में बहुत गम्भीर परिवर्तन हुए हैं। इसने लोकतांत्रिक, राजनीतिक प्रक्रियाओं जैसी आधुनिक संस्थाओं से अनुकूलन स्थापित कर लिया है। अन्तर्जातीय विवाह की घटनाओं से हम आज अपरिचित नहीं है। अस्पृश्यता जिस रूप में पहले मौजूद थी, आज लगभग समाप्त हो चुकी है। सकारात्मक प्रयासों ने यदि पूरी जाति नहीं तो कम से कम निम्न जाति के बहुत से लोगों और उनके परिवारों की प्रस्थिति को ऊँचा उठाया है, लेकिन फिर भी जाति आज बहुत से रूपों में बनी हुई हे। कुछ राजनीतिक दल कुछ विशिष्ट जातियों के साथ ऐतिहासिक एवं सामयिक कारणों से जुड़े हुए हैं। हालांकि, देश की चुनाव प्रक्रिया लोकतांत्रिक है, लेकिन कुछ लोगों द्वारा कुछ मात्रा में बल प्रयोग और जातिगत निष्ठा की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। आरक्षण मुद्दे पर ताजा बहस ने जाति के अस्तित्व एवं अन्तर्जातीय सम्बन्धों को कुछ सीमा तक अभद्र बना दिया है। जाति की दो विशेषताएं हैं—सांस्कृतिक और संरचनात्मक।

आज संयुक्त परिवार व्यवस्था का परम्परागत स्वरूप मौजूद नहीं है। इसे नाभिकीय परिवार व्यवस्था द्वारा प्रतिस्थापित न किए जाने के परिणामस्वरूप, देश में एक नए तरीके की परिवार व्यवस्था उत्पन्न हुई। आज ज्यादातर परिवार नाभिकीय जैसी गृहस्थी का निर्माण करते हैं तथा संयुक्त परिवारों के एक घटक के रूप में सतत मौजूद रहते हैं। इसलिए आज संयुक्त या नाभिकीय परिवार की बजाय गृहस्थियों का अध्ययन करना अधिक प्रासंगिक हो गया है।

औद्योगीकरण, नगरीकरण तथा लोकतन्त्रकरण वृहद्—संरचनात्मक परिवर्तन की प्रक्रियाएँ हैं। इन क्षेत्रों में परिवर्तन आधुनिकीकरण के प्रभाव को व्यक्त करता है परन्तु परम्परागत संरचनात्मक वास्तविकताओं के प्रति लचीलापन आज भी प्रभावी है, जो प्रतिस्थापन के स्थान पर सात्मीकरण की प्रक्रिया को व्यक्त करता है।

भारत में आधुनिक औद्योगिक विकास का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। यह मुश्किल से डेढ़ शताब्दी पहले शुरुहआ, परन्तु अभी मात्र आधी शताब्दी पर्व ही इसने तीव्रता प्राप्त की है। विगत कुछ दशकों में वास्तव में

बहुत प्रभावशाली औद्योगिक वृद्धि हुई है परन्तु इस दौर में औद्योगिक आधुनिकीकरण की समाजशास्त्रीय वास्तविकता को जानने के लिए सूक्ष्म विश्लेषण की आवश्यकता है। भारत के औद्योगिक आधुनिकीकरण का सिद्धान्त, विकास के पूँजीवादी और समाजवादी दृष्टिकोणों के संयोजन को प्रस्तुत करता है। इसने मिश्रित अर्थव्यवस्था के नीति प्रस्ताव का मार्ग प्रशस्त किया है। यह व्यवस्था, 1991 में सरकार द्वारा नई आर्थिक नीति लागू करने तक चलती रही है। इस नई आर्थिक नीति ने उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण का समर्थन किया।

शिक्षा, समाज के वरिष्ठलोगों द्वारा अपने ज्ञान को, कनिष्ठसदस्यों को हस्तान्तरित करने की प्रक्रिया है। इस प्रकार यह एक संस्था है जो किसी व्यक्ति उसके समाज के साथ जोड़ने तथा संस्कृति की निरन्तरता को कायम रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इमाइल दुर्खीम शिक्षा को वयस्क पीढी द्वारा उनके लोगों को प्रभावित करने की क्रिया के रूप में परिभाषित करते हैं जो अभी वयस्क सामाजिक जीवन में प्रवेश के लिए तैयार नहीं है। वे दृढ़तापूर्वक कहते है कि कोई समाज तभी कायम रह सकता है, जबकि, उसके सदस्यों के बीच पर्याप्त मात्रा में समरूपता विद्यमान हो। शिक्षा इस समरूपता को स्थायित्व और मजबूती प्रदान करती है। एक बच्चा, शिक्षा के माध्यम से समाज के आधारभूत नियमों, विनियमों, मानदण्डों तथा मूल्यों को सीखता है।

यहाँ पर आधुनिकीकरण में शिक्षा की भूमिका पर अधिक लिखना सिर्फ पुनरोक्ति होगी। शिक्षा अनिवार्य रूप से आधुनिकीकरण की पूर्व–शर्त है। यह लोगों को उनके अपने पास–पड़ोस, बाहर की दुनिया के बारे में जानने के योग्य बनाती है। यह उनके दृष्टिकोण और विश्व दृष्टि को तार्किक और मानवीय बनाकर उनका रूपान्तरण करती है। फिलहाल हमें यह ध्यान में रखना होगा कि शिक्षा का आधुनिकीकरण हो चुका है तथा बदले में यह भारतीय समाज के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में अपना योगदान दे रही है।

आधुनिकता का विकास अनेक ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के परिणाम स्वरूप हुआ जोकि सर्वप्रथम यूरोप में घटित हुई तथा जिन्होंने केवल नवीन संरचनाओं तथा संगठनों को ही विकसित नहीं किया अपितु एक नई संरचना एवं सभ्यता का विकास भी किया। सत्रहवीं तथा अट्ठारहवीं शताब्दी की राजनीतिक क्रान्तियाँ, उन्नीसवीं शताब्दी में वैज्ञानिक क्रान्ति तथा तार्किकता का विकास और आर्थिक क्षेत्र में बहुमुखी विकास इन्हीं प्रक्रियाओं का परिणाम था। यूरोप में होने वाले इन संरचनात्मक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिवर्तन से ही आधुनिकता की शुरूआत होती है। अतः आधुनिकीकरण परिवर्तन तथा राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया हे। यह एक नियोजित विकास की प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य एक ऐसे समतावादी समाज का निर्माण करना है जो देश के शासन

में जनता की सहभागिता को सुनिश्चित करसामाजिक समता का मार्ग प्रशस्त करे। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया आर्थिक तथा सामाजिक समानता एवं विकास के मूलभूत चिन्तनों से प्रेरित है। इस प्रक्रिया ने समाज के सभी सम्पद्रायों एवं वर्गों को प्रभावित किया है।

प्रस्तुत शाखाओं में उत्तरदाताओं से आधुनिकीकरण की प्रक्रिया एवं नगरीय युवाओं की जीवन शैलीके बारे में जानकारी ली गई है। जिसका विवरण अथवा विश्लेषण निम्न हैं–

तालिका संख्या–2.1

निदर्शन में उत्तरदाताओं की शिक्षा अनुसार आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के बारे में विचारों का विश्लेषण

शिक्षा का स्तर	क्या आधुनिकीकरण के बारे में आप जानते हैं		यदि हाँ तो कृपया बताइय								
	हाँ	नही	परिवर्तन राष्ट्रीय निर्माण	नियोजित विकास	समतावी समाज का निर्माण	जनता की सहभागिता	आर्थिक एवं सामाजिक समानता	सम्प्रदायिक एवं वर्गों को प्रभावित करना	युवावर्ग प्रभावित होना	अन्य	कुल योग
स्नातक प्रथम वर्ष	48 (15.73)	07 (2.29)	10 (3.27)	08 (2.62)	10 (3.27)	07 (2.29)	07 (2.29)	03 (0.98)	02 (0.65)	01 (0.32)	55 (18.03)
स्नातक द्वितीय वर्ष	47 (15.40)	06 (1.96)	07 (2.29)	09 (2.95)	08 (2.62)	06 (1.96)	07 (2.29)	02 (0.65)	06 (1.96)	02 (0.65)	53 (17.37)
स्नातक तृतीय वर्ष	46 (15.08)	06 (1.96)	06 (1.96)	08 (2.62)	07 (2.29)	05 (1.63)	06 (1.96)	07 (2.29)	05 (1.63)	02 (0.65)	52 (17.04)
स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष	54 (17.70)	07 (2.29)	11 (3.60)	09 (2.95)	11 (3.60)	07 (2.29)	08 (2.62)	04 (1.31)	03 (0.98)	01 (0.32)	61 (20.00)
स्नातकोत्तर अन्तिम वर्ष	50 (16.39)	08 (2.62)	09 (2.95)	10 (3.27)	08 (2.62)	06 (1.96)	07 (2.29)	05 (1.63)	03 (0.98)	02 (0.65)	58 (19.01)
उच्च स्तरीय डिग्री	23 (7.54)	03 (0.98)	04 (1.31)	03 (0.98)	05 (1.63)	02 (0.65)	03 (0.98)	03 (0.98)	02 (0.65)	01 (0.32)	26 (8.52)

कुल योग	268 (87.86)	37 (12.13)	47 (15.40)	47 (15.40)	49 (16.06)	33 (10.81)	38 (12.45)	24 (7.86)	21 (6.88)	09 (2.95)	305 (100.00)

नोट : कोष्ठक में प्रतिशत को दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 2.1 में उत्तरदाताओं की शिक्षानुसार आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के बारे में विचारों का विश्लेषण दर्शाया गया है। उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आधुनिकीकरण के बारे में आप जानते हैं। 87.86 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसका जबाव सकारात्मक दिया है। उनका कहना है कि आधुनिकीकरण के बारे में अच्छी तरह से जानकारी है। 12.13 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नकारात्मक विचार व्यक्त कियैं सकारात्मक विचारधारा वाले उत्तरदाताओं का मत है कि इससे सम्बन्धित निम्न घटक हैं–(1) परिवर्तन एवं राष्ट्रीय निर्माण (15.40 प्रतिशत) (2) नियोजित विकास (15.40 प्रतिशत) (3) समतावादी समाज का निर्माण (16.06 प्रतिशत) इसके अतिरिक्त अन्य घटकों की जानकारी दी। जैसे–(1) जनता की सहभागिता (10.81 प्रतिशत) (2) आर्थिक एवं सामाजिक समानता (12.45 प्रतिशत) (3) सम्प्रदायों एवं वर्गों को प्रभावित करना (7. 86 प्रतिशत) (4) युवावर्ग प्रभावित होना (6.55 प्रतिशत) इत्यादि। अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि आधुनिकीकरण समाज तथा राष्ट्र निर्माण के चहुँमुखी विकास में आधारभूत भूमिका अदा करता है।

तालिका संख्या–2.2

निदर्शन में उत्तरदाताओं की शिक्षा अनुसार आधुनिकीकरण किन देशों की देन है, के बारे में विचारों का विवरण विश्लेषण

शिक्षा का स्तर	भारत में आधुनिकीकरण क्या पाश्चातय् देशों की देन हैं		यदि हाँ तो कौन–कोन से देश हैं						
	हाँ	नही	अमेरिका	इग्लैंड	यूरोप	रूस	जापान	अन्य	कुल योग
स्नातक प्रथम वर्ष	42 (13.77)	13 (4.26)	08 (2.62)	07 (2.29)	10 (3.27)	09 (2.95)	07 (2.29)	01 (0.32)	55 (18.03)
स्नातक द्वितीय वर्ष	41 (13.44)	12 (3.93)	07 (2.29)	08 (2.68)	09 (2.95)	10 (3.27)	06 (1.96)	01 (0.32)	53 (17.37)
स्नातक तृतीय वर्ष	42 (13.77)	10 (3.27)	09 (2.95)	07 (2.29)	10 (3.27)	08 (2.62)	06 (1.96)	02 (0.95)	52 (17.04)

स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष	54 (17.70)	07 (2.29)	11 (3.60)	10 (3.27)	09 (2.95)	11 (3.60)	09 (2.95)	04 (1.31)	61 (20.00)
स्नातकोत्तर अन्तिम वर्ष	52 (17.04)	06 (1.96)	10 (3.27)	11 (3.60)	08 (2.62)	10 (3.27)	08 (2.62)	05 (1.63)	58 (19.01)
उच्च स्तरीय डिग्री	23 (7.54)	03 (0.95)	06 (1.96)	04 (1.31)	04 (1.31)	05 (0.98)	03 (0.95)	01 (0.32)	26 (8.52)
कुल योग	254 (83.27)	51 (16.72)	51 (16.72)	47 (15.40)	50 (16.39)	53 (17.37)	39 (12.75)	14 (4.59)	305 (100.00)

नोट : कोष्ठकमें प्रतिशत को दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 2.2 में उत्तरदाताओं की शिक्षा स्तर अनुसार आधुनिकीकरण किन देशों की देन के बारे में विचारों का विश्लेषण दर्शाया गया है। उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या भारत में आधुनिकीकरण पाश्चात्य देशों की देन है। 83.27 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसका उत्तर सकारात्मक रूप में दिया है। केवल 16.72 प्रतिशत उत्तरदाता इस मत से सहमत नहीं है। उत्तरदाताओं का विचार है कि आधुनिकीकरण मुख्यता निम्न देशों की देन है–अमेरिका, इग्लैण्ड, यूरोप, रूस, जापान तथा अन्य देश शामिलहै। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आधुनिकीकरण मुख्यतयः सर्वप्रथम पाश्चात्य देशों की देन है।

तालिका संख्या–2.3

निदर्शन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के स्तर अनुसार आधुनिकीकरण के बढ़ने से सुविधाओं के बारे में विचारों का विश्लेषण

शिक्षा का स्तर	क्या भारत को आधुनिकीकरण की ओर बढ़ने में सुविधाऐं है।		यदि हाँ तो विवरण दै					
	हाँ	नही	देशों से सहायता	सामाजिक परिवर्तन	प्रजातांत्रिक व्यवस्था	वैश्वीकरण	अन्य	कुल योग
स्नातक प्रथम वर्ष	51 (16.72)	04 (1.31)	11 (3.60)	10 (3.27)	12 (3.93)	14 (4.59)	05 (1.63)	55 (18.03)
स्नातक द्वितीय वर्ष	50 (16.39)	03 (0.98)	10 (3.27)	12 (3.93)	11 (3.60)	13 (4.26)	04 (1.31)	53 (17.37)
स्नातक तृतीय वर्ष	49 (16.06)	03 (0.98)	09 (2.95)	11 (3.60)	12 (3.93)	12 (3.93)	05 (1.63)	52 (17.04)

स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष	56 (18.36)	05 (1.63)	12 (3.93)	13 (4.26)	11 (3.60)	15 (4.91)	05 (1.63)	61 (20.00)
स्नातकोत्तर अन्तिम वर्ष	52 (17.04)	06 (1.96)	11 (3.60)	12 (3.93)	13 (4.26)	14 (4.59)	02 (0.65)	58 (19.01)
उच्च स्तरीय डिग्री	24 (7.86)	02 (0.65)	06 (1.96)	05 (1.63)	04 (1.31)	07 (2.29)	02 (0.65)	26 (8.52)
कुल योग	282 (92.45)	23 (7.54)	59 (19.34)	63 (20.32)	63 (20.65)	75 (24.59)	23 (7.54)	305 (100.00)

नोट : कोष्ठकमें प्रतिशत को दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 2.3 में उत्तरदाताओं की शिक्षा के स्तर अनुसार आधुनिकीकरण के बढ़ने से सुविधाओं के बारे में विचारों का विवेचन किया गया है। उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या भारत के आधुनिकीकरण की ओर बढ़ने में सुविधाएँ उपलब्ध है। 92.45 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न का जबाव सकारात्मक दिया है और केवल 7.54 प्रतिशत उत्तरदाता इस मत से सहमत नहीं है। आधुनिकीकरण को बढावा देने के लिए अनेक घटक जिम्मेदार है। जैसे विकसित देशों से सहायता, सामाजिक परिवर्तन, प्रजातान्त्रिक व्यवस्था, वैश्वीकरण, उदारीकरण तथा निजीकरण इत्यादि है। अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि भारतवर्ष में आधुनिकीकरण का बढ़ावा देने के लिए अनेक उपरोक्त वर्जित सुविधाएँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

तालिका संख्या–2.4

निदर्शन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के स्तर अनुसार भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के बारे में विचारों का विवेचन

शिक्षा का स्तर	क्या भारत को आधुनिकीकरण की ओर बढ़ने में सुविधाऐं है।						
	विकास तथा तकनीक का विकास	प्रौद्योगिकी में परिवर्तन	शिक्षा तथा चिकित्सा में क्रान्ति	सामाजिक एवं आर्थिक विकास	जीवनशैली में परिवर्तन	अन्य	कुल योग
स्नातक प्रथम वर्ष	12 (3.93)	11 (3.60)	10 (3.27)	09 (2.95)	08 (2.62)	05 (1.63)	55 (18.03)

स्नातक द्वितीय वर्ष	11 (3.60)	10 (3.27)	09 (2.95)	12 (3.93)	07 (2.29)	04 (1.31)	53 (17.37)
स्नातक तृतीय वर्ष	10 (3.27)	09 (2.95)	08 (2.62)	11 (3.60)	10 (3.27)	04 (1.31)	52 (17.04)
स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष	13 (4.26)	12 (3.93)	11 (3.60)	10 (3.27)	08 (2.62)	07 (2.29)	61 (20.00)
स्नातकोत्तर अन्तिम वर्ष	12 (3.93)	11 (3.60)	10 (3.27)	09 (2.95)	09 (2.95)	07 (2.29)	58 (19.01)
उच्च स्तरीय डिग्री	07 (2.29)	06 (1.96)	05 (1.63)	04 (1.31)	03 (0.98)	01 (0.32)	26 (8.52)
कुल योग	65 (21.31)	59 (19.34)	53 (17.37)	55 (18.03)	45 (14.75)	28 (9.18)	305 (100.00)

नोट : कोष्ठकमें प्रतिशत को दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 2.4 में उत्तरदाताओं की शिक्षा के स्तर अनुसार भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के बारे में विचारों का विश्लेषण किया है। उत्तरदाताओं के अनुसार भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से अनेक घटकों में वृद्धि हुई ळें जैसे–विज्ञान तथा तकनीक का विकास, प्रौद्योगिकी में परिवर्तन, शिक्षा तथा चिकित्सा में क्रान्ति, सामाजिक एवं आर्थिक विकास तथा जीवन शैली में परिवर्तन इत्यादि। इसके अलावा युवाओं की जीवन शैली में आधारभूत परिवर्तन हुए है। अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि आधुनिकीकरण भारत वर्ष में एक वरदान सिद्ध हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अस्थाना ईश्वर शरण, शिक्षा : दशा एवं दिशा, अकादमिक एक्सेलेन्स, दिल्ली, 2005
- आरजू, मोजम्मिल हसन, भारतीय महिला एवं आधुनिकीकरण, नई दिल्ली : कामनवेल्थ पब्लिशर्स, 1993.
- अधिकारी जी0एस0 और एस0 अधिकारी, ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मूल्य, भारतीय आधुनिक शिक्षा, 1987
- भटनागर डॉ0 राजेन्द्र मोहन, छात्र आन्दोलन–विश्लेषण और उपलब्धियाँ, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 1982

- सी0रे0, नैतिक चिन्तन के आयाम, तरूण पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2000
- ढोलकिया आर0पी0, बाह्म मानव मूल्य और विश्व के धर्म, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, 2001
- गुप्ता लक्षता, भारतीय समाज और शिक्षा, वंदना पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2006
- गुप्ता डॉ0 (श्रीमती) मधु, शिक्षा–संस्कार एवं उपलब्धियाँ, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली, 2000
- गुप्ता एन0एल0, मूल्यपरक, शिक्षा और समाज, समान पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2000
- जोशी डॉ0 धनंजय, नैतिक शिक्षा एवं नागरिक बोध, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2005
- जोशी एस0सी0, ''छात्र नेतृत्व और परिसर की अशान्ति'' नार्दन बुक कम्पनी, नई दिल्ली,1992.